Vol. II, Issue II October' 2020

कामरूप दर्पण

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा का मुखपत्र
(Society Regd No. : RS/KAM (M) 263/Q/264 of 2017-18)
e-mail : sammelankamrupsakha@gmail.com URL : www.sammelankamrupsakha.com

मारवाड़ी सम्मेलन
कामरूप शाखा

: संपादक :
विनोद कुमार लोहिया

: सह संपादक :
पवन कुमार जाजोदिया

: पृष्ठ सज्जा :
शामेश्वर शर्मा

: मुद्रक :
वसुंधरा एसोसिएट्स
गुवाहाटी

भरसक प्रयास किया गया है कि 'कामरूप दर्पण' के इस अंक में कोई त्रुटि ना रहे, परंतु भूल मानव का स्वभाव है, अत: कोई त्रुटि रह गई हो तो खेद है। कोई सुझाव हो तो kamrupdarpan@gmail.com के माध्यम से सूचित करें।

अध्यक्ष की कलम से

मारवाड़ी सम्मलेन, कामरूप शाखा ने वैश्विक महामारी कोरोना को ध्यान में रखते हुए 9 अगस्त 2020 को साधारण सभा 'जूम' एप के माध्यम से संपन्न की। सभी को ज्ञात है कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य क्या खेल दिखा रहा है। स्वास्थ्य की दृष्टि से सभी को सुरक्षित रहना तथा सरकार के द्वारा आदेशित दिशा-निर्देशों का पालन करना आवश्यक है। कहा गया है 'सावधानी हटी दुर्घटना घटी...' सावधानी के बावजूद हमारे कई सदस्य और उनके परिजन कोरोना संक्रमित हो गए थे। स्वस्थ होकर लौटने के बाद हमारे कई सदस्यों और उनके परिजनों ने कोरोना ग्रसित लोगों के लिए प्लाज्मा दान कर रहे हैं, जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं।

असम प्रदेश की वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य में प्रतिदिन परिवर्तन हो रहा है। अभी तक लगभग आधा दर्जन से अधिक नवगठित दल आगामी विधानसभा चुनाव की चुनावी रूप रेखा प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें नए क्षेत्रीय या राष्ट्रीय दल से कोई चिंता नहीं है, क्योंकि भारत के पवित्र संविधान द्वारा यह प्रदत्त अधिकार है कि राज्य तथा राष्ट्र की उन्नति हेतु नए दल का गठन किया जा सकता है, परंतु हमें तथा हमारे समाज को यह चिंतन तथा मंथन करना चाहिए कि हमारा स्थान कहाँ है? असम समझौते की धारा 6, एन.आर.सी, सी.ए.ए. का मुद्दा इत्यादि प्रमुख कानून में हमारे हिंदीभाषी समाज का स्थान कहाँ है? इन्हीं सब विषयों के निराकरण हेतु पूर्वोत्तर के सभी शाखाओं ने प्रांतीय समिति को सर्वसम्मति से अधिकार दिया था कि राज्य सरकार के गृह विभाग एवं केंद्र के गृह मंत्रालय को समाज की समस्याओं से अवगत कराएं, परंतु वर्तमान में प्रांतीय नेतृत्व के पास सशक्त इच्छाशक्ति का अभाव है कि प्रमुख विषयों को समाज के तथा सरकार के समक्ष रख सके।

चिंता का विषय है कि विगत 9-10 महीनों में प्रांत के अध्यक्ष पद के चुनाव दो बार स्थगित किया जा चुके हैं। आखिर प्रांत के गलियारों में इस दशा और दिशा का निर्माण किन अदृश्य शक्तियों के हाथों से नियंत्रित हो रहा है? संविधान की धारा 19 के तहत प्रत्येक नागरिक को मौखिक तथा लिखित रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, परन्तु इस अभिव्यक्ति पर अंकुश से समस्त शाखाओं के धैर्य की सीमा समाप्त हो रही है। इस तरह की घटनाएं हमारे समाज के इतिहास में अवांछित हैं। अगर ऐसा होता रहा तो समाज के प्रबुद्ध समाजसेवी लोग समाजसेवा से विमुख हो जाएंगे और सम्मलेन परिवार की प्रतिष्ठा दांव पर चढ़ जाएगी। इस विषय पर समाज के द्वारा गंभीरता से चिंतन एवं मंथन करने का समय आ गया है। केंद्र हो या प्रांत हो या शाखा हो, प्रत्येक स्तर पर हर सदस्य को संगठन के संविधान का सम्मान तथा उसके अनुशासन का अक्षरस: पालन करना चाहिए। किसी को भी संविधान के विपरीत गमन नहीं करना चाहिए।

कामरूप शाखा अपनी स्थापना काल से ही सशक्त समाज के निर्माण हेतु अपनी स्पष्ट विचार धारा प्रकट करती आ रही है। शाखा प्रत्येक संवैधानिक मर्यादाओं का निर्वहन करती है। शाखा द्वारा प्रत्येक सभा का लिखित विवरण, सभा में सदस्यों की गणपूरक उपस्थिति होने पर सभा करना, प्रांत को नियमित प्रतिवेदन भेजना, कार्यक्रमों में साधारण सदस्यों की सहभागिता, शाखा का त्रैमासिक मुखपत्र 'कामरूप दर्पण', शाखा की अपनी वेबसाइट के साथ-साथ अन्य संगठनों से समन्वय स्थापित कर सामाजिक प्रकल्प आयोजित करना, इसके चरित्र के मुख्य पहलु हैं। शाखा की सामूहिक नेतृत्व की प्रवृत्ति इसकी कार्य करने की शैली, क्षमता, सामजिक व सांस्कृतिक विचारधारा से परिलक्षित होती है।

निरंजन कुमार सीकरिया
अध्यक्ष

संपादकीय

महोदय,

गत दिनों मेरे पुराने मित्र धेमाजी के भाई श्री उमेश खण्डेलिया ने असमिया भाषा में लिखी अपनी पुस्तक 'अखमर मारवाड़ी समाज' मुझे भेंट की। मैं बिलकुल अंदाजा लगा पा रहा हूँ कि कितनी शिद्दत से मेहनत, समय और धन खर्च कर उन्होंने समाज का भला किया है। मैंने उनकी 10 पुस्तकें क्रय की हैं ताकि अपने असामिया मित्रों को भेंट कर सकूँ और उनको पता चले कि असम के उत्थान में हम मारवाड़ियों का क्या योगदान है।

'हमारे संगठन में आंतरिक लोकतंत्र' हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए। चुनाव लोकतंत्र की आत्मा है। चार-पांच लोगों द्वारा मिलकर नेतृत्व थोप देना प्रांतीय सभा के सदस्यों के मताधिकार का अपहरण है। सम्मलेन में हर स्तर पर चुनावों को समाज के विभाजन के तौर पेश किया जाता है। मैं इस विचार धारा के विपरीत विचार रखता हूँ। हममें से अधिकतर लोग एकाधिक संगठनों में शामिल हैं। जिन संगठनों में आर्तरिक लोकतंत्र जीवित हैं, वहां संगठन प्रगति करता है। 1935 में डिब्रुगढ़ में लोहित किनारे जन्मी हमारी संस्था क्या समाज में उचित स्थान बनाने में सफल हो पाई है? जब भी चुनाव की प्रक्रिया आंरभ होती है, शाखा, प्रांत और राष्ट्र स्तर पर कुछ नेता सक्रिय हो उठते हैं ताकि नामजद उम्मीदवारों को बैठाकर आम सहमति से एक नया नाम खोजा जा सके, वो भी इस आशंका से कि कहीं समाज विभाजित न हो जाए। इस विचार धारा पर चल कर 85 वर्ष गुजार दिए, लेकिन सम्मलेन समाज में स्वीकार्य सक्षम प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करने के लिए संघर्ष करता नजर आ रहा है।

चुनाव होंगे तो समाज के नेताओं की जवाबदारी बढ़ेगी। उनको शाखाओं के दौरे करने पड़ेंगे। अपने संकल्प पत्र देने होंगे। उन्हें पिछले अधिवेशन में लिए गए प्रस्तावों के क्रियान्वयन की समीक्षा रखनी होगी। एक उम्मीदवार का समर्थन करना दुसरे/तीसरे उम्मीदवार का विरोध है, यह मानना अपरिपक्व मानसिकता है। चुनाव इतने ही बुरे हैं तो क्यों नहीं संविधान से उखाड़ फेंकते हम। हमारी शाखा के वर्तमान अध्यक्ष श्री निरंजन सिकरिया चुनाव जीत कर आए, लेकिन उसके बाद पिछले 18 महीनों में उन्हें किसी अप्रिय स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा।

आम सहमति वाले नेता को पावर शेयरिंग के खेल में उलझा कर रख दिया जाता है। तथाकथित 'किंग मेकर' अपनी गोटियां फिट करने में लगे रहते हैं। कुछ सीनियर्स के द्वारा थोपा गया अध्यक्ष, सदस्यों के प्रति कभी जवाबदेह नहीं हो सकता। बहुत नुकसान कर दिया हमने सगठन का। अब लोकतंत्र की बयार बहने देनी चाहिए। कहने में गुरेज नहीं है कि मारवाड़ी युवा मंच जो माँ कामाख्या की धरती से सम्मलेन के 42 साल बाद 1977 में जन्मा और आज सम्पूर्ण भारत में छा गया है। जब मंच के चुनाव होते हैं तो समाज के जनसाधारण तक में उत्सुकता बनी रहती है।

हमारे प्रान्त के चुनाव एक बार CAA को लेकर पहले स्थगित और बाद में रद्द हो गए। दुबारा जो प्रक्रिया आरम्भ हुई तो पहले दिन से ही विवादों में उलझी रही। चुनाव में उम्मीदवारों के नामांकन वापसी तक तो जो हुआ, वो सिर्फ बीमार मानसिकता को दर्शाता है। केंद्र ने पुन: चुनाव रोक दिया। उनकी ये रोक, स्थगन है या रद्द समझ से परे है। न चुनाव अधिकारी से रपट ली गई और न ही केंद्रीय नेतृत्व ने यह बताना जरूरी समझा कि संविधान की किस धारा के अंतर्गत उन्होंने ने यह कार्यवाही की है। इतने बड़े निर्णय से पहले कोई ठोस संवैधानिक प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया। मेरी समझ में रोक का अर्थ 'स्थगन' ही होना चाहिए।

प्रकृति का शास्वत नियम है कि हम जैसा बोयेंगे वैसा ही काटेंगे।

विनोद कुमार लोहिया
संपादक, कामरूप दर्पण
फोन : 94351 06500
ई-मेल : vklohia@gmail.com

झांकने की सही जगह अपना गिरेबान है और रहने की सही जगह अपनी औकात...

शाखा की वार्षिक आम सभा ऑनलाइन आयोजित

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा की तृतीय कार्यकारिणी की पहली वार्षिक साधारण सभा गत 9 अगस्त को आयोजित की गई। कोरोना महामारी के मद्देनजर सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए यह सभा *जूम् एप* के माध्यम से ऑनलाइन आयोजित की गई। शाखाध्यक्ष श्री निरंजन सीकरिया ने सदस्यों का स्वागत कर सभा का शुभारंभ किया। इसके बाद आगे की कार्यवाही कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद लोहिया ने संभाली। कार्यसूची के अनुमोदन के बाद सहसचिव श्री अनुज चौधरी ने पिछली सभा का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने शाखा की वार्षिक गतिविधियों की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष दीपक जैन ने वर्ष 2018-19 का ऑडिटेड और वर्ष 2019-20 का अन-ऑडिटेड लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। साधारण सभा ने सर्वसम्मति से सीए श्री विवेक मुरारका को वर्ष 2020-21 के लिए ऑडिटर नियुक्त किया।

बैठक के दौरान शाखा सदस्य श्री बाबुलाल नवलखा ने लाइफ मेम्बरशिप फीस से आए रुपयों की फिक्स्ड डिपोजिट बनाने का सुझाव दिया। वहीं सदस्य श्री जीवनचंद कांकरणिया ने ऑडिट रिपोर्ट में अध्यक्ष व सचिव के हस्ताक्षर होने तथा कोषाध्यक्ष द्वारा इसे एटेस्टेड किए जाने का सुझाव दिया, जिसेस्वीकार किया गया। इस ऑनलाइन बैठक में शाखा की परियोजना 'परिणय बंधन' पर भी चर्चा की गई। कार्यकारी अध्यक्ष व 'परिणय बंधन' के संयोजक श्री विनोद कुमार लोहिया ने इसके बारे में जानकारी दी। सदस्य श्री अजीत जैन ने इस कार्यक्रम को और बेहतर बनाने का सुझाव दिया तथा श्री विमल कांकरा ने इसे और गतिशील बनाने की बात कही। शाखा के 50 से अधिक सदस्यों ने इस

वर्चुअल मीटिंग में भाग लिया। अध्यक्ष श्री निरंजन सीकरिया ने सभा के समक्ष अपना संबोधन प्रस्तुत किया। अंत में सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने सदस्यों को इस ऑनलाइन सभा में उनकी सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया।

पांचवीं कार्यकारिणी सभा

शाखा की पांचवीं कार्यकारिणी सभा भी कोरोना महामारी के कारण वर्चुअल माध्यम से की गई। व्हाट्सअप के जरिए कार्यकारिणी सदस्यों को पिछली सभा का प्रतिवेदन, सम्मेलन के स्थापना दिवस, भोगाली बिहू, गणतंत्र दिवस, होली मिलन समारोह और कोविड-19 महामारी को लेकर आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रेषित की गई। इस सभा में नए कार्यकारिणी सदस्य के रूप में श्री बाबुलाल नवलखा, श्री अनुप कुमार जाजोदिया और श्री राजेश पोद्दार को शामिल किया गया। सभा में भावी कार्यक्रमों के अंतर्गत 15 अगस्त 2020 को आयोजित होने वाले शाखा के स्थापना दिवस एवं स्वतंत्रता दिवस समारोह तथा रक्तदान शिविर के आयोजन की रूपरेखा पर चर्चा की गई।

कोर कमिटी की बैठक

जी. डी. सिकरिया काम्प्लेक्स में गत 8 जून 2020, सोमवार को शाखा की कोर कमिटी की एक सभा आयोजित हुई। इस सभा में शाखा के भावी कार्यक्रम पर चर्चा की गई। बैठक में एक महिला को आर्थिक सहायता देने का निर्णय लिया गया। मालूम हो कि उक्त महिला कोरोना महामारी के दौरान घोषित लॉकडाउन के कारण आर्थिक तंगी से परेशान थी। उसने शाखाध्यक्ष श्री निरंजन सिकरिया से आर्थिक सहायता देने का आग्रह किया था। उसके इस आग्रह को स्वीकार करते हुए शाखा की तरफ से उसे 5000 रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

प्रांतीय अध्यक्ष के द्वारा 'कामरूप दर्पण' जून 2020 अंक का विमोचन

मारवाड़ी सम्मेलन की कामरूप शाखा द्वारा अपने मुखपत्र 'कामरूप दर्पण' के जून 2020 अंक का प्रकाशन किया गया है, जो कि वर्तमान वैश्विक महामारी को देखते हुए और भी अधिक प्रासंगिक है। जहाँ एक ओर हर स्तर एवं क्षेत्र के कार्यों में शिथिलता आई है वहीं दूसरी ओर सामाजिक गतिविधियों में भी विघ्न पड़ा है, ऐसे समय में इस पत्रिका का प्रकाशन अत्यंत ही प्रशंसनीय कार्य है। इसके लिए शाखा के अध्यक्ष भाई निरंजन जी सीकरिया के साथ ही संपादक विनोद कुमारजी लोहिया, निवर्तमान अध्यक्ष पवनजी जाजोदिया एवं उनके संपादक मंडल को पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। पत्रिका का यह अंक भी काफी रोचक है, जिसमें पद्मश्री स्व. कन्हैयालालजी सेठिया को जानने

का नई पीढ़ी को अवसर मिलेगा। कोरोना महाकाल के समय जरूरतमंदों तक खाद्य सामग्री पहुँचाने एवं असम में अटके हुए अन्य प्रदेशों के लोगों को उनके राज्यों तक भेजने के प्रांतीय इकाई के कार्य में अभूतपूर्व सहयोग प्रदान करने का महती कार्य हमारी कामरूप शाखा ने किया है। एक बार पुन: मैं सम्मेलन की कामरूप शाखा के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए इस सुंदर प्रकाशन के लिए कामरूप शाखा के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। मैं डिजिटल माध्यम से पत्रिका के इस अंक का विमोचन कर समाज को समर्पित करता हूँ।

मधुसूदन सीकरिया, प्रांतीय अध्यक्ष
पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन।

बुराई ढूंढने का शौक है तो आईने का इस्तेमाल कीजिए, दूरबीन का नहीं...

हर वर्ष की तरह मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ने इस साल भी हर्षोल्लास से 74वां स्वतंत्रता दिवस व शाखा का छठवां स्थापना दिवस मनाया। हालांकि इस वर्ष विश्वव्यापी कोरोना महामारी के कारण स्वतंत्रता दिवस समारोह सीमित रूप से आयोजित किया गया।

गुवाहाटी महानगर के आठगांव, चाबीपुल स्थित आठगांव चाबिपुल प्राथमिक विद्यालय में हर बार की तरह स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री श्री राजकुमार तिवाड़ी मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। उन्होंने शाखा के पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। समारोह में शाखा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया, संस्थापक अध्यक्ष श्री संपत मिश्र, निवर्तमान शाखाध्यक्ष श्री पवन कुमार जाजोदिया, सचिव श्री दिनेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री दीपक जैन, विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री हरिधन काकोती सहित कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

ध्वजारोहण के बाद शाखा सदस्यों के साथ उपस्थित लोगों के बीच फल और मिठाइयां भी वितरित की गई। बताते चलें कि इस वर्ष कोरोना संकटकाल के कारण इस स्वाधीनता दिवस समारोह में स्कूल के बच्चों व अभिभावकों को आमंत्रित नहीं किया गया। कार्यक्रम के दौरान शाखा के पदाधिकारियों व सदस्यों ने कोविड-19 प्रोटोकॉल के साथ अन्य जरूरी दिशा-निर्देशों का पालन किया। इस मौके पर उपस्थित लोगों ने विशेष रूप से फेस शील्ड (मुख आवरण) पहन रखे थे। कार्यक्रम के अंत में शाखा सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने सभी को धन्यवाद दिया।

बुलाई गई विशेष कार्यकारिणी सभा

सितंबर माह की 9 तारीख को मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा की विशेष कार्यकारिणी सभा बुलाई गई। यह विशेष सभा मुख्य रूप से पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन (पूप्रमास) के प्रांतीय अध्यक्ष के चुनाव से संबंधित थी। जूम एप पर ऑनलाइन आयोजित इस सभा का उद्देश्य प्रांतीय अध्यक्ष के नाम का निर्धारण करना था। सभा में प्रांतीय अध्यक्ष श्री निरंजन सिकरिया, कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्री पवन कुमार जाजोदिया, सचिव श्री दिनेश गुप्ता सहित अन्य सदस्यों ने भाग लिया। कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया ने प्रांतीय अध्यक्ष के चुनाव की जानकारी देते हुए बताया कि इस चुनाव के लिए दो उम्मीदवारों श्री राजकुमार तिवाड़ी और श्री प्रमोद तिवाड़ी के नामों का अनुरोध आया है। उन्होंने सदस्यों को दोनों उम्मीदवारों के बारे में जानकारी दी तथा सभी सदस्यों से इस संबंध में अपना-अपना मत रखने को कहा। उपस्थित सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से श्री प्रमोद तिवाड़ी के नाम का प्रस्ताव रखा ।गौरतलब है कि किन्ही कारणों से इस चुनाव को स्थगित कर दिया गया है। सभा के अंत में सचिव श्री दिनेश गुप्ता ने सभी को धन्यवाद ज्ञापन दिया।

श्री गोवर्द्धन प्रसाद गाड़ोदिया

बने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष

श्री गोवर्द्धन प्रसाद गाड़ोदिया अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नए अध्यक्ष घोषित किए गए हैं। अखिल भारतीय समिति की बैठक संपूर्ण भारत में जूम एप के माध्यम से आयोजित की गई। इस बैठक में सत्र 2020-22 के लिए सम्मेलन के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सर्राफ ने जूम मीटिंग के माध्यम से बैठक की अध्यक्षता करते हुए अपने उदगार व्यक्त किए। उन्होंने विस्तार से सम्मेलन की गतिवधियों पर प्रकाश डाला। तदुपरांत राष्ट्रीय महामंत्री श्री गोपाल झुनझुनवाला ने दो वर्षीय कार्यकाल का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। चुनाव पदाधिकारी श्री नंदलाल सिंघानिया व सह चुनाव पदाधिकारी श्री संजय हरलालका ने नए सत्र के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया के नाम की सर्वसम्मति से घोषणा की। इस ऑनलाइन बैठक में रांची समन्वयक, झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन श्री गाड़ोदिया के कांके रोड स्थित निवास में प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ संयुक्त रूप से शामिल होकर बैठक मे भाग लेकर इस स्वर्णिम पल का साक्षी बने। श्री गाड़ोदिया के नाम की घोषणा के

पश्चात प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, महामंत्री श्री पवन शर्मा, पूर्व अध्यक्ष श्री भागचंद पोद्दार, श्री विनय सरावगी व श्री राजकुमार केड़िया, श्री रमेश मेरठिया, श्री कमल केडिया, श्री विनोद जैन, श्री मनोज बजाज, श्री विष्णु कौशल राजगठिया, श्री बसंत मित्तल, श्री ओमप्रकाश प्रणव, श्री विजय गाड़ोदिया, श्री मंगतूराम गाड़ोदिया, श्री भगवती भुवालका ने पुष्पगुच्छ अंगवस्त्र व मिठाई खिलाकर नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष का वृहदस्वागत-सम्मान किया। झारखंड प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सर्राफ से होमटाउन होने के कारण राष्ट्रीय अधिवेशन झारखंड प्रांत के रांची जिला में करने का प्रस्ताव दिया। साथ ही झारखंड से राष्ट्रीय अध्यक्ष को चयनित करने का स्वागत किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री गाड़ोदिया ने अपने संबोधन में कहा कि प्रकाश का अभाव ही अंधेरा करता है, इस वटवृक्ष रूपी सम्मेलन को अपनी पूरी योग्यता व क्षमता से अभिसिंचित कर पूर्ण उजाले को निरंतरबहाल रखूंगा, साथ ही समाज व संगठन की चहुंमुखी विकास के लिए सदैव प्रयासरत रहूंगा।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में कामरूप शाखा ने मारी बाजी

मारवाड़ी युवा मंच (मायुमं) की कामाख्या शाखा द्वारा गत 5 सिंतबर को आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में मारावाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ने बाजी मारी। इस प्रतियोगिता में शाखा का प्रतिनिधित्व शाखा सदस्य श्री विकास बजाज व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमन बजाज ने किया। गौरतलब है कि मायुमं, कामाख्या शाखा द्वारा कोरोना महामारी के कारण यह प्रतियोगिता जूम एप पर ऑनलाइन कराई थी। प्रतियोगिता में श्री विकास बजाज व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमन बजाज को प्रथम स्थान मिला। दूसरे स्थान पर मारवाड़ी युवा मंच, गुवाहाटी ग्रेटर शाखा का प्रतिनिधित्व कर रही जयंत जालान व नीरज जालान की टीम रही तथा तेरापंथ महिला मंडल की सारिका डागा और अंकिता बोथरा की टीम को तीसरा स्थान मिला। इस प्रतियोगिता में कई अन्य संगठनों की टीमों ने भाग लिया था। इस उपलब्धि पर शाखा ने श्री विकास बजाज व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमन बजाज को बधाई दी है।

नए वोटर मतदाता सूची में ऐसे दर्ज करा सकते हैं नाम

नए मतदाता, जिन्होंने 18 वर्ष की आयु पूरी कर ली है ऑनलाइन मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करा सकते हैं।

नए इच्छुक मतदाताओं को देश के मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज कराने के लिए भारत के चुनाव आयोग की नेशनल वोटर्स सर्विस पोर्टल के फॉम 6 को आनलाइन भरना आवश्यक है।

फॉर्म भरने के लिए http: //www.nvsp.in पर लॉग ऑन करें। इसके बाद 'Apply online for registration of new voter/due to shifting from AC' पर क्लिक करने के बाद फॉर्म 6 खुल जाएगा।

राज्य, जिले और निर्वाचन क्षेत्र के नाम जैसे सामान्य प्रश्नों के अलावा, आपको अपने किसी भी रिश्तेदार या पड़ोसी के चुनाव फोटो पहचान पत्र (EPIC) नंबर को भरने के लिए भी कहा जाएगा। इसके बाद आपको पासपोर्ट आकार की फोटो, जन्मतिथि का प्रमाण और पते का प्रमाण सहित आवश्यक दस्तावेजों की फोटो अपलोड करने के लिए कहा जाएगा। एक बार फॉर्म भरने और दस्तावेजों को संलग्न करने के बाद, घोषणा को भरें और फॉर्म जमा करें।

फॉर्म जमा करने के बाद, आपको एक संदर्भ आईडी नंबर दिया जाएगा। आप इस संदर्भ आईडी नंबर का उपयोग करके अपने आवेदन की स्थिति को ट्रैक कर सकते हैं। प्रपत्र संसाधित होने के बाद, यह संबंधित बूथ स्तर के अधिकारी (BLO) के पास जाएगा। आवश्यक सत्यापन के बाद, आपका वोटर आईडी तैयार हो जाएगा और आपको वितरित किया जाएगा।

जो लोग ऑफलाइन आवेदन करना चाहते हैं, या ऑनलाइन प्रक्रिया के साथ किसी भी समस्या का सामना कर रहे हैं वे मतदाता पहचान पत्र के लिए ऑफ़लाइन भी आवेदन कर सकते हैं।

ऑफलाइन पंजीकरण के लिए, आपको बूथ लेवल ऑफिसर (BLO) पर जाकर फॉर्म 6 प्राप्त करना होगा या आप इसे वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं।

ऑनलाइन फॉर्म की तरह, आपको फॉर्म में पूछे गए आवश्यक विवरण को भरना होगा। विवरण भरने के बाद, दो पासपोर्ट आकार के फोटो, जन्म के प्रमाण की फोटोकॉपी और पते के प्रमाण के साथ अधिकारी को फॉर्म जमा करें।

आपको अपने परिवार के सदस्य के वोटर आईडी कार्ड की एक फोटोकॉपी जमा करने के लिए भी कहा जाएगा। यदि आपके परिवार में किसी के पास मतदाता पहचान पत्र नहीं है, तो आप अपने पड़ोसी या मित्र के मतदाता पहचान पत्र की छायाप्रति जमा कर सकते हैं।

एक बार जब आप बीएलओ के साथ सभी आवश्यक दस्तावेज जमा कर देते हैं, तो संबंधित विभाग कागजात का सत्यापन करेगा और आपको अपने वोटर आईडी कार्ड के साथ वितरित किया जाएगा।

पारिवारिक रक्तदान शिविर

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया ने अपने पिता स्व. शिव प्रसादजी लोहिया की 90वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में समाज में पहली बार एक अनूठा पारिवारिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया। यह रक्तदान शिविर मारवाड़ी अस्पताल के ब्लड बैंक परिसर में गत 25 सितंबर 2020, शुक्रवार को आयोजित किया गया। इस शिविर में कुल 8 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। लोहिया परिवार आह्वान करता है कि हमारे समाजबंधुओं को रक्तदान के प्रति जागरूक होकर अपने परिवार के विशेष दिवस पर, स्मृतियों को याद रखने व उक्त दिन को स्मरणीय बनाने के लिए रक्तदान शिविर का आयोजन करना चाहिए।

साक्षात्कार

एक मुलाकात डॉ. वंदना मिंडा हेडा के साथ

मारवाड़ी समाज की युवक-युवतियों ने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। ऐसे प्रतिभाशाली लोग न सिर्फ सफलता हासिल करते हैं, बल्कि दूसरे के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनते हैं। समाज को गौरान्वित करने वाली ऐसी ही एक प्रतिभावान शख्सियत हैं श्रीमती वंदना मिंडा हेडा। श्रीमती वंदना ने हाल ही में गौहाटी विश्वविद्यालय से "A study on Awareness, Prospects and Challenges of Microfinance in Urban area of Kamrup (Metropolitan) District of Assam" विषय पर शोध करके Ph.D.की उपाधि हासिल की है। उनकी इस उपलब्धि पर 'कामरूप दर्पण' की टीम उन्हें हार्दिक बधाई देती है। वे मारवाड़ी समाज की गृहणियों के लिए एक प्रेरणास्रोत हैं। 'कामरूप दर्पण' के संपादक विनोद लोहिया के साथ एक खास साक्षात्कार में श्रीमती वंदना ने अपने जीवन के कड़े संघर्ष के बारे में बताया। पेश है बातचीत के कुछ अंश :

➲ आपके माता-पिता का क्या नाम है और आपका मायका कहाँ है ?

➢ मेरे पिता का नाम श्री तेजपाल मिन्डा और माँ का नाम श्रीमती शकुन्तला मिन्डा है। मेरे मायका भंगागढ़, गुवाहाटी में है। मैं गुवाहाटी में ही पली-बढ़ी हूँ।

➲ आपके परिवार में कौन-कौन हैं और उनका परिचय बताएं ?

➢ श्री महेश हेडा मेरे पति हैं तथा मेरे ससुर का नाम श्री बालमुकुंद हेडा व सास का नाम भगवती हेडा है। मेरा दस साल का बेटा है और उसका नाम वेदांत वीर हेडा है। हम पान बाजार, गुवाहाटी में रहते हैं।

➲ आपका विवाह कब हुआ ?

➢ इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करने के बाद वर्ष 1999 में मेरा विवाह हो गया।

➲ क्या आप स्कूल के समय से ही मेधावी रही हैं ?

➢ हां, मैं स्कूल के समय से ही पढ़ाई में अच्छी रही हूँ। मेरी माँ कहती हैं कि मुझे बचपन से ही खिलौने से अधिक किताबों का शौक रहा है। मैंने अपनी स्कूल की पढ़ाई चांदमारी स्थित होली चाइल्ड स्कूल से पूरी की थी। कॉटन कॉलेज में साइंस स्ट्रीम (विज्ञान संकाय) से 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा इसके बाद असम इंजीनियरिंग कॉलेज में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की।

➲ आपने अपना मास्टर्स कब पूरा किया तथा जॉब कहाँ किया ?

➢ शादी के बाद मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और गौहाटी यूनिवर्सिटी से M.B.A. की डिग्री हासिल की। M.B.A के वक्त मैंने Bombay Stock Exchange, Mumbai से Summer Project किया, जिसे बहुत सराहा गया। ज्ञात हो कि यह प्रोजेक्ट "Valuation of Equity Shares in Indian Capital Market - An Analytical Study" को International B - School Summer Project Competition के Finance Module में विश्व भर में सातवां स्थान मिला, जो मेरे लिए गर्व की बात थी। एक गृहणी होने के नाते घर संभालने के साथ-साथ मैंने कड़ी मेहनत के साथ पढ़ाई की। इसमें मेरे पति व सास-ससुर ने मेरा भरपूर सहयोग दिया। M.B.A. में गोल्ड मेडलिस्ट होने के कारण मुझे विदेशी बैंक कंपनी **स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक** में नौकरी का ऑफर मिला और मैंने वर्ष 2001 में ज्वॉइन कर लिया। इसके बाद वर्ष 2006 से मैंने करीब साढ़े छह साल तक कोटक महिंद्रा बैंक में ब्रांच मैनेजर के रूप में काम किया।

➲ सफलताओं के बावजूद आपने नौकरी क्यों छोड़ दी ?

➢ वर्ष 2010 में मेरे बेटे के जन्म के बाद भी मैं कोटक महिंद्रा बैंक में काम करती रही। लेकिन 2012 में बेटे के बीमार पड़ने के बाद मैंने नौकरी छोड़ने का फैसला किया। दरअसल मेरे बेटे के फेफड़े में संक्रमण हो गया था और डॉक्टर ने उसका विशेष रूप से ध्यान रखने की सलाह दी। तब मुझे लगा कि अब वक्त के तकाजा है कि मैं नौकरी छोड़कर अच्छी माँ का फर्ज निभाऊं। जब मैंने पढ़ाई की तो हमेशा टॉप पर रही। और मैंने बहुत अच्छे से नौकरी भी की। मुझे अपने व्यवसायिक कैरियर के दौरान मुझे कई तरह के अवार्ड जैसे **बेस्ट पर्सनल फिनांशियल कंसलटेंट, बेस्ट एम्प्लोई अवार्ड, बेस्ट टेलर अवार्ड, बेस्ट ब्रांच मैनेजर पैन इंडिया अवार्ड** भी मिले। अब मुझे अच्छी मां भी बनना था, इसलिए मैंने नौकरी छोड़ दी।

➲ आपके मन में ये विचार कब और कैसे आया कि आपको Ph.D. करनी चाहिए ?

➢ नौकरी छोड़ने के छह महीने बाद सौभाग्य से गौहाटी विश्वविद्यालय के एम.बी.ए. विभाग, जहां से मैं एम.बी.ए. की थी, से नौकरी का प्रस्ताव मिला। मैंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। मैं विद्यार्थियों को '**बैंकिंग एंड रिस्क मैनेजेंट**' से संबंधित विषय पढ़ाती थी। मैं शुरू में बहुत कम वक्त के लिए वहां जाती थी। फिर धीरे-धीरे अपना समय बढ़ा दिया। मुझे अपने बच्चे को भी साथ ले जाने की सहूलियत मिली हुई थी। जब मैं क्लास लेने के लिए चली जाती तो विभाग के अन्य प्रोफेसर व स्टाफ उसका ध्यान रखते थे। एम.बी.ए विभाग में नौकरी के दौरान मुझे Ph.D. करने का विचार आया। घर पर लैपटॉप पर ही अपने शोध का कार्य कर लेती थी। सिर्फ फील्ड विजिट के लिए ही मुझे बाहर जाना पड़ता था।

➲ आपने शोध के लिए 'A study on Awareness, Prospects and Challenges of Micro-finance in Urban area of Kamrup (Metropolitan) District of Assam' विषय ही क्यों चुना ?

➢ मैं यहां बताना चाहूंगी कि बैंक में काम करने के दौरान **माइक्रो फिनांस** का विषय मुझे आकर्षित करता था। इस विषय पर शोध करना चाहती थी। लेकिन व्यस्तता के कारण यह संभव नहीं हो पाया। एम.बी.ए विभाग में नौकरी के दौरान मैंने अपनी इस इच्छा को पूरा करने का मन बनाया।

➲ आगे आपकी क्या योजना है ?

➢ दो-तीन चीजें मेरे दिमाग हैं। पहली ये कि मैंने Ph.D. के दौरान जिस विषय पर शोध किया है, उसकी एक अंतरिम रिपोर्ट बनाने में

जुटी हूं ताकि उक्त रिपोर्ट को सरकार को सौंप सकूं। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि शहरी इलाकों के झुग्गी-झोपड़पट्टियों में जाकर मैंने जो तथ्य व सर्वे अपने शोध के दौरान किए हैं उसका सरकार आर्थिक विकास के लिए उपयोग कर सके। **माइक्रो फिनांस** साधारण तौर पर ग्रामीण इलाकों के लिए होता है, लेकिन मैंने अपने शोध में यह बताने की कोशिश की है कि कैसे हम शहरी इलाकों में इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए इसके लिए मैंने कुछ मैथमैटिकल मॉडल्स के जरिए रिसर्च वर्क डेवलॉप किया है। सरकार इसका लाभ शहरों में जो गरीब लोग हैं के आर्थिक विकास के लिए कर सकती है। सरकार उचित समझे तो रिपोर्ट बैंकों को भी दे सकती है।

दूसरी मैं फेसबुक के जरिए एक चैट शो कर रही हूं। मेरा इंस्टाग्राम हैंडल भी है, जिसका नाम **'एक्सप्लोरिंग का गोल्ड माइन'** है। आपको बता दूं कि मैंने कुछ वक्त के लिए दूरदर्शन पर न्यूज एंकरिंग भी की थी। इसी पैशन को आगे बढ़ाने के लिए मैंने यह चैट शो शुरू किया। इसमें हम उन शख्शियत से बात करते हैं, जिन्होंने अपने व्यवसायिक क्षेत्र विशिष्ट मुकाम हासिल किया है, फिर भी आम लोग उनसे अनजान हैं। इस चैट शो के जरिए मैं अपने समाज को उनसे रूबरू कराने तथा प्रेरणा पाने की कोशिश कर रही हूं। इसेक अलावा मैं एम.बी.ए. विभाग में काम कर रही हूं। इसके साथ-साथ कई तरह के प्रेरणादायक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी कर रही हूं।

➲ अपने शौक के बारे में कुछ बताएं।

➢ आपको बता दूं कि मैं एक भारतनाट्यम डांसर भी हूं। इन दिनों पी.पी. बोरा, जो साहित्य अकादमी अवार्ड विनर हैं, उनसे मैंने भारत नाट्यम का प्रशिक्षण लिया है। मैंनें अरिंगृत्तम भी किया और अभी भी डांस परफोर्म करती हूं।

➲ आज की युवतियां विवाह को अपने कैरियर में बाधा मानती है, इस विषय पर आपका व्यक्तिगत अनुभव क्या रहा ?

➢ विवाह को बाधा मानना गलत है। बाधा हमारे दिमाग में है। कोई भी काम अपने जीवन में करना चाहे तो आपको मेहनत करनी पड़ेगी। बिना मेहनत के कुछ भी नहीं मिलता। सफलता के लिए कोई शॉर्टकट नहीं हैं। मैंने जो कुछ भी पाया है, वह मुझे कड़ी मेहनत से ही मिला है। मेरा यह मानना है कि सभी को अपनी जिंदगी में सघर्ष करना ही पड़ता है। जब शादी हो जाती है तो स्वभाविक रूप से आपकी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है, कहने का मतलब यह नहीं है कि हमारे समाज में स्त्री को दबाकर रखा जाता है या प्रताड़ित किया जाता है, बल्कि मतलब है कि हमारे समाज पुरुष व स्त्री का जो काम है वह करीब-करीब बांटा गया है। घर के काम व बच्चों की देखभाल में महिलाओं की बड़ी जिम्मेदारी होती है। अगर मैं कोई और काम कर रहीं हूं तो मुझ पर अतिरिक्त जिम्मेदारी बढ़ जाती है। मैं अपने काम में तभी सफल हो सकूंगी जब मैं इन अतिरिक्त जिम्मेदारियों को निभाने की चुनौती को स्वीकार कर सकूं। एक महिला के नजरिए से मैं कहना चाहूंगी कि शादी के बाद महिलाएं कम्प्लेशंट हो जाती हैं। शादी के बाद अधिकांश महिलाएं दोहरी जिम्मेदारी लेना नहीं चाहती हैं। मुझे लगता है कि महिलाओं की यही सोच उनकी बाधा है। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट में पढ़ाते समय मुझे एक चौंकाने वाली बात पता चली कि हमारे समाज की युवा लड़कियां सी.ए. तो बनना चाहती हैं, लेकिन कोई जॉब करना या कैरियर में आगे बढ़ना नहीं चाहती हैं। वह चाहती हैं कि उन्हें सी.ए. की डिग्री मिल जाए और शादी करके खुशहाल जिंदगी जीना उनका मकसद होता है। ऐसे में विवाह बाधा कैसे हो सकता है। रोड़ा तो हमारी सोच में है। आपमें कुछ कर गुजरने की चाहत हो, जुनुन हो तो विवाह रोड़ा नहीं है। मेरा यह भी मानना है कि आप अगर कुछ करना चाहते हैं तो आपके परिवार वाले व अन्य लोग आपका सहयोग जरूर करते हैं।

➲ मातृत्व प्राप्त करना, क्या किसी स्त्री के कैरियर में रुकावट डालता है ? अगर हाँ, तो मातृत्व और कैरियर में समन्वय कैसे बनाया जाए ?

➢ रुकावट कहना मैं ठीक नहीं समझती, लेकिन परेशानियां तो थोड़ी बहुत होती ही हैं। शादी के बाद परिवार की जिम्मेदारियां तो रहती ही हैं, बच्चा होने के बाद उन पर अतिरिक्त जिम्मेदारी आ जाती है। कामकाजी महिलाओं को अपने बच्चे की देखभाल के साथ अपने कैरियर पर भी ध्यान रखना पड़ता है। जब आप इस दोहरी जिम्मेदारी को निभाना नहीं चाहते हैं तो यह जरूर आपके लिए रुकावट है। कुछ पाने के लिए आपको त्याग व संर्घष तो करना ही पड़ेगा। इसके लिए महिलाओं को मातृत्व और कैरियर में समन्वय बनाकर चलना पड़ता है। इसके लिए पहले आपको अपनी प्राथमिकती तय करनी होती है। मैंने भी अपनी प्राथमिगकता तय की कि मुझे अपने परिवार, बच्चे की देखभाल के साथ अपने कैरियर को भी आगे लेकर चलना है। इस दौरान मुझे त्याग भी करना पड़ा। मुझे बैंक की नौकरी छोड़नी पड़ी। लेकिन मुझमें कुछ करने का जुनुन था, इसलिए आगे बढ़ने के लिए और रास्ता निकला। मैंने अपनी प्रतिभा को अलग दिशा दी। मुझे Ph.D. करने का मौका मिला और इसको बड़ी शिद्दत के साथ किया। मुझे खुशी है कि जब मेरी जो प्राथमिकता थी मैंने उसे बखूबी के साथ निभाया।

मेरे पापा कहते थे कि हमें अपने आप को पानी की तरह बनाना चाहिए। जिधर भी रास्ता मिले वह उसी तरफ बह जाए। जो भी जमीन हो उसे उर्वरक बनाती हुई चली जाए। वह जहां से भी बहे वहां से लोगों का उद्धार करते हुए चली जाए। कैरियर को आगे बढ़ाने के लिए यह उचित नहीं कि हमें शादी ही नहीं करनी चाहिए या बच्चा पैदा नहीं करना चाहिए। ये सभी चीजें भी कैरियर के साथ जरूरी हैं। आपको इन सबमें तालमेल बिठाकर चलने की कला डेवलॉप करनी होगी।

➲ आप आज की युवा पीढ़ी, खास कर विवाहित युवा महिलाओं को, क्या संदेश देना चाहेंगी ?

➢ सबसे पहला संदेश मैं यह देना चाहूंगी कि युवा लड़कियों व महिलाओं को ब्लेम गेम बंद कर देना चाहिए। अक्सर देखा गया है कि जब लोग कुछ चीज नहीं कर पाते हो तो वे दूसरों पर दोष मढ़ देते हैं कि मैं इस वजह से यह नहीं कर पाई, मेरी किस्मत यही लिखा था आदि। हम अपने मन को संतुष्ट करने के लिए किसी और को ब्लेम कर देते हैं। युवाओं को अपने कार्य के लिए खुद को जिम्मेदार मानना चाहिए। फिर चाहे वह सही हो या गलत।

दूसरा संदेश कि आप अपने कार्य के लिए उत्साही रहें, आप जो भी करते हैं उसे पूरे उत्साह व शिद्दत के साथ किजिए। आप कोई काम करते हैं तो कई तरह की रुकावट व परेशानियों का सामना करना ही पड़ता है, लेकिन आप जब पूरी शिद्दत के साथ काम करते हैं तो तमाम बाधाएं दूर होती चली जाती हैं। आपमें उत्साह होगा, जुनुन होगा तो आपको रोकने वाले लोग भी आपका साथ देने लगेंगे।

तीसरी बात मैं कहना चाहूंगी कि सफलता के लिए कोई शॉर्टकट नहीं है। सफल होने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी ही होगी। मैं तो यह कहूंगी कि भगवान ने हम महिलाओं को अद्भुत शक्ति दी है कि हम एक साथ कई तरह की जिम्मेदारियों को निभा सकती हैं। इस बात पर हमें गर्व होना चाहिए।

अंत में यह कहना चाहती हूं कि युवा लड़कियों व महिलाओं को निर्भय होना चाहिए। कोई भी काम बिना डरे व घबराए करनी चाहिए। सफलता हासिल करने का एक रास्ता बंद हो तो दूसरा रास्ता खोलने का प्रयास करना चाहिए। हमें अपने जीवन में सबको साथ लेकर व तालमेल बिठाकर चलना चाहिए। मैं समझती हूं कि सबके साथ समन्वय से ही जीवन में खुशहाली आती है।

जन्म जयंती पर विशेष

नववैष्णव गुरु : श्रीमंत शंकरदेव

श्रीमंत शंकरदेव असमिया भाषा के अत्यंत प्रसिद्ध कवि, नाटककार तथा हिन्दू समाजसुधारक थे।

जन्म और शिक्षा :

श्रीमंत शंकरदेव का जन्म 26 सिंतबर 1449 ई. में नगाँव जिले के आलिपुखुरी गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम कुसुम्बर शिरोमणि भूइयाँ और माता का नाम सत्यसंध्या था। भगवान शिव के वरदान से पुत्र प्राप्त होने के कारण उनका नाम माता-पिता ने शंकर रखा। जन्म के कुछ समय पश्चात् माता-पिता का देहांत हो जाने के बाद इनकी अपनी दादी खेरसूती ने इनकी परवरिश और बाल्यकाल से इनका देखभाल किया। इस प्रकार अभिभावक विहीन शिशु शंकरदेव धीरे-धीरे किशोर उम्र की ओर बढ़ चला। किन्तु पढ़ाई में इनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी, वह ज्यादातर समय खेल-कूद में व्यस्त रहते थे।

आखिरकार उनके दादी माँ ने काफी समझा-बुझाकर बारह वर्ष के उम्र में गुरु महेंद्र कन्दली के गुरुकुल में इन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज दिया, बाल्यकाल से प्रतिभाशाली शंकरदेव ने बहुत ही कम समय में काफी शिक्षा प्राप्त कर ली और अपने अन्य सहपाठियों के मध्य ये काफी तीव्र बुद्धि के बालक के रूप में अपना स्थान बनाया। बहुत जल्द ही भाषा का ज्ञान होने से इन्होने मात्राओं के ज्ञान प्राप्त किये बिना एक कविता की रचना की :

কৰতল কমল কমল দল নয়ন।
ভব দব দহন গহন-বন শয়ন।।
নপৰ নপৰ পৰ সতৰত গময়।
সভয় মভয় ভয় মমহৰ সততয়।।
খৰতৰ বৰ শৰ হত দশ বদন।
খগচৰ নগধৰ ফনধৰ শয়ন।।
জগদঘ মপহৰ ভৱ ভয় তৰন।
পৰ পদ লয় কৰ কমলজ নয়ন।।

इस कविता का हिंदी अर्थ :

जिनके हाथ कमल जैसे हो तथा नैन कमल की पंखुरिओं जैसा। वो मनुष्य को हर विपत्ति से बचाकर उनके हृदय में विराजते हैं। आप सर्वव्यापी और सभी की आंतरिक आत्मा है। आप लगातार मेरे डर को दूर करते हैं और मेरी सुरक्षा को सुनिश्चित करते हैं। आप बड़े तेज तीर के क्षेत्ररक्षक है। दस सिर वाले दानव का संहारक भी हैं। आप (गरुड़) पक्षी और पहाड़ के उत्थान की सवारी करते हैं तथा काले नाग क दमन भी करते हैं। आप सांसारिक पापों का तिरस्कार करते हैं। हे कमल नयन, मुक्ति देने वाले भी आप ही हैं, आपको नमन।

इस प्रकार बड़े कम दिनों में ही शंकरदेव चारों वेद, चौदह शास्त्र और अट्ठारह पुराण शास्त्रों का अध्ययन किया। उनको गुरू महेंद्र कन्दलि की पाठशाला में प्रवेश दिलाया गया, जहाँ उन्होंने कुछ ही वर्षों में व्याकरण, रामायण, महाभारत, पुराण, वेद, ज्योतिष आदि विद्याओं का अध्ययन पूरा कर लिया। इसके बाद उनका विवाह सूर्यवती नामक कन्या से हुआ।

कार्यकलाप :

32 वर्ष की आयु में वे देशाटन के लिए निकल पड़े और गंगाघाट, गया, श्रीक्षेत्र, वृन्दावन, गोकुल, मथुरा, सीताकुंड, बद्रिकाश्रम आदि स्थानों का भ्रमण किया। 12 वर्षों के देशाटन में उनकी भेंट देश के अन्य बड़े महापुरुषों से हुई।

दूसरी बार उन्होंने दक्षिण भारत के संतों से भेंट की और धर्म के सच्चे स्वरूप का अध्ययन किया। असम लौटकर उन्होंने 'एकशरण नाम धर्म' की स्थापना की। इसे 'महापुरुषीया धर्म' भी कहते हैं। उन्होंने मूर्तिपूजा के बदले भगवान के नाम को अधिक महत्व दिया, इसलिए नामघरों में मूर्तिपूजा नहीं होती। उन्होंने भाउना अर्थात् पौराणिक नाटकों के अभिनय तथा नृत्य-संगीत के द्वारा धर्म प्रचार किया और अनेक पुस्तकों की रचना की। श्रीमंत शंकरदेव को अपने धर्म के प्रति विशेष अभिरुचि थी। फलत: उन्होंने अनेक धार्मिक ग्रन्थों की रचना की। उनमें 'कीर्तन घोषा' प्रमख है। इसके अतिरिक्त अंकिया नाट का भी निर्माण किया। इन्होंने विभिन्न स्थानों पर धर्म का प्रचार करने के लिए नामघर का निर्माण किया।

उपसंहार :

श्रीमंत शंकरदेव ने असम के लोगों को अशिक्षा और अंधविश्वास से दूर रहने की शिक्षा दी और ज्ञान का सच्चा स्वरूप दिखाया। 23 अगस्त 1568 ई. में भीषण ज्वर के कारण उनका देहांत हो गया। आज भी असम के नामघरों में मणिकूट (गुरू आसन) पर उनके लिखे कीर्तन-घोषा-श्रीमद् भागवत की प्रति रखी जाती है और उसी की पूजा की जाती है, जिससे श्रीमंत शंकरदेव आज भी हमें सच्चाई, सादगी, ज्ञान और एकता का संदेश देते प्रतीत होते हैं।

कंकना बरुवा, एम.ए.

साहित्यिक परिचय

काव्य

हरिश्चन्द्र उपाख्यान
अजामिल उपाख्यान
रुक्मिणी हरण काव्य
बलिछलन
अमृत मन्थन

भक्तितत्व प्रकाशक ग्रन्थ

भक्ति प्रदीप
भक्ति रत्नाकर (संस्कृत में)
निमि-नवसिद्ध संवाद
अनादि पतन

अनुवादमूलक ग्रन्थ

भागवत (प्रथम), (द्वितीय)
दशम स्कन्ध का आदि खण्ड
द्वादश स्कन्ध
रामायण का उत्तर काण्ड

नाटक

पत्नी प्रसाद
कालियदमन
केलिगोपाल
रुक्मिणीहरण
पारिजात हरण
राम विजय

गीत

बरगीत
भटिमा
टोटय
चपय

नाम-प्रसंग ग्रन्थ

कीर्तन
गुणमाला

उपलब्धि

डॉ. ए.के. पंसारी

गुवाहाटी के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान 'द असम रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी' के चांसलर श्री ए.के. पंसारी को गौहाटी विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया है। श्री ए.के. पंसारी को 'Problems & Prospects of Real Estate Bussiness in Assam' विषय पर शोध के लिए 'Doctrate of Philosophy (Phd)' की डिग्री प्रदान की गई है। उनकी इस उपलब्धि पर मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा उन्हें हार्दिक बधाई प्रेषित करती है।

डॉ. संतोष कुमार जैन

गुवाहाटी के विशिष्ट चार्टर्ड अकाउंटेंट व समाजसेवी सी.ए. श्री संतोष कुमार जैन (काला) को गौहाटी विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है। सी.ए. श्री संतोष कुमार जैन (काला) ने गौहाटी विश्वविद्यालय द्वारा 'An Insight into India's Export performance since 1951-52' विषय पर शोध के लिए 'Doctrate of Philosophy (Phd)' की डिग्री हासिल की है। उनकी इस उपलब्धि पर मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा उन्हें हार्दिक बधाई प्रेषित करती है।

डॉ. ए.के. पंसारी की पुस्तक 'बातों बातों में' का विमोचन करते मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल।

डॉ. ए.के. पंसारी की पुस्तक 'बातों बातों में' का विमोचन

असम रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के चांसलर डॉ. ए.के. पंसारी की पुस्तक 'बातों बातों में' का मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने विमोचन किया। इस पुस्तक में हिंदी, असमिया और अंग्रेजी के लेखकों द्वारा लिखे गए 43 लेखों को शामिल किया गया है। ये सभी लेख दैनिक अखबारों 'दैनिक पूर्वोदय', 'असम ट्रिब्यून' और 'जन्मभूमि' में पिछले 15 वर्षों में प्रकाशित हुई हैं। इसमें से अधिकांश लेख कोरोना महामारी के दौरान लिखे और प्रकाशित हुए हैं।

फ्रूट जूस का किया वितरण

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा ने अगस्त महीने में 'डेस्टिनेशन होम' सहित गुवाहाटी महानगर के विभिन्न जगहों में फ्रूट जूस का वितरण किया। अपने सामाजिक कार्यक्रमों के अंतर्गत शाखा के पदाधिकारियों व सदस्यों ने रियल कंपनी के फ्रूट जूस बांटे। शाखा ने अनाथ बच्चों की देखभाल करने वाले 'डेस्टिनेशन होम' को भारी मात्रा में फ्रूट जूस के पैकेट प्रदान किए। इसके लिए 'डेस्टिनेशन होम' के प्रबंधकों व बच्चों ने शाखा सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इसके अलावा शाखा ने फैंसी बाजार, पानबाजार, पलटन बाजार, मालीगांव, कुमारपाड़ा, शांतिपुर,धीरेनपाड़ा सहित अन्य कई जगहों पर 150 कार्टन फ्रूट जूस बांटे। इसमें शाखा के अध्यक्ष श्री निरंजन सिकरिया, कार्यकारी अध्यक्ष श्री विनोद कुमार लोहिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्री पवन कुमार जाजोदिया, सचिव श्री दिनेश गुप्ता, संयुक्त सचिव अनुज चौधरी व अन्य सदस्यों ने फ्रूट जस वितरण कार्यक्रम में सहभागिता की।

साहित्य

कोमल कोठारी

राजस्थान की लोक कलाओं, लोक संगीत और वाद्यों के संरक्षण, लुप्त हो रही कलाओं की खोज में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

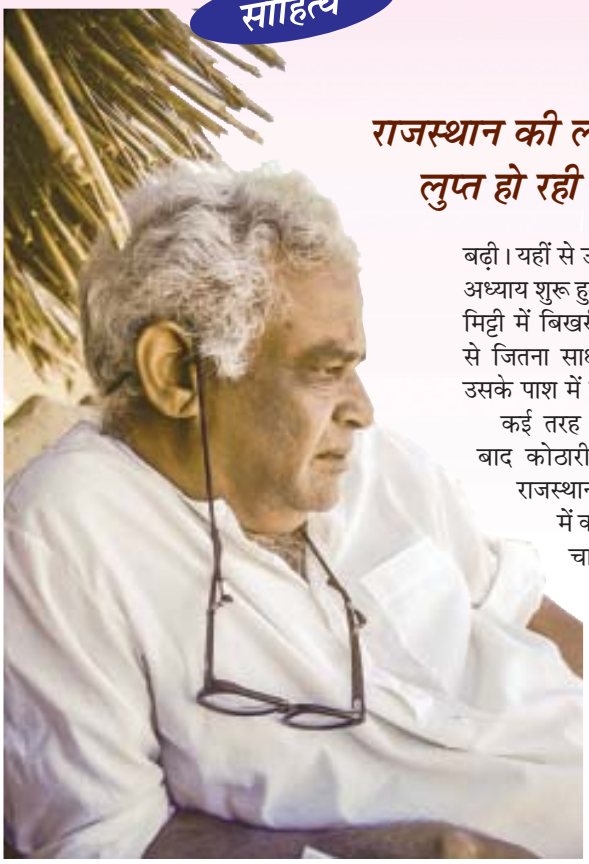

स्व. कोमल कोठारी (1929-2004) ने लोक कलाओं को संरक्षित करने में अपूर्व योगदान दिया था। वे जीवन से लबालब भरे इस राजस्थानी लोक संगीत को इस सब से कहीं आगे ले जाना चाहते थे। 1967 में इन कलाकारों के साथ उनकी स्वीडन की यात्रा के बाद चीजें इस तेजी से बदलीं कि आज राजस्थान के लगातार विकसित होते पर्यटन की इस संगीत के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने राजस्थान की लोक कलाओं, लोक संगीत और वाद्यों के संरक्षण, लुप्त हो रही कलाओं की खोज आदि के लिए बोरूंदा में **रूपायन** संस्था की स्थापना की थी। भारत सरकार द्वारा सन् 2004 में उन्हें कला के क्षेत्र में **पद्म भूषण** से सम्मानित किया गया था।

4 मार्च, 1929 में जोधपुर में जन्मे श्री कोमल कोठारी ने उदयपुर में शिक्षा पाई। इनका परिवार गांधीवादी था। कोमल कोठारी ने 1953 में अपने पुराने दोस्त विजयदान देथा, जो देश के अग्रणी कहानीकारों में गिने जाते हैं, उनके साथ मिलकर **प्रेरणा** नामक पत्रिका निकालना शुरू किया। **प्रेरणा** का मिशन था- हर महीने एक नया लोकगीत खोजकर उसे लिपिबद्ध करना। उनके परिवार के राष्ट्रवादी विचारों और कोमल कोठारी के संगीत प्रेम का मिला-जुला परिणाम यह निकला कि उनकी दिलचस्पी 1800 से 1942 के बीच रचे गए राजस्थानी देशभक्तिमूलक लोकगीतों में बढ़ी। यहीं से उनके जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ। उन्होंने राजस्थान की मिट्टी में बिखरी अमूल्य संगीत सम्पदा से जितना साक्षात्कार किया, उतना वे उसके पाश में बंधते गए।

कई तरह के काम कर चुकने के बाद कोठारी जी 1958 में अन्ततः राजस्थान संगीत नाटक अकादमी में कार्य करने लगे और अगले चालीस सालों तक उन्होंने एक जुनून की तरह राजस्थान के लोकसंगीत को रेकॉर्ड करने और संरक्षित करने का बीड़ा उठा लिया। संगीत को रिकॉर्ड करके संरक्षित करने का विचार उन्हें पेरिस में बस चुके एक भारतीय संगीतविद देबेन भट्टाचार्य से मिला था। भट्टाचार्य साहब की पत्नी स्वीडन की थीं और उनके प्रयासों से ही लांगा-मंगणियार संगीत को पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मंच प्राप्त हुआ।

1959-60 के दौरान वे कई बार जैसलमेर गए और लांगा तथा मंगणियार गायकों से मिले। बहुत समझाने-बुझाने के बाद वे 1962 में पहली बार इन लोगों के संगीत को रेकॉर्ड कर पाने में सफल हुए। उन्हीं की मेहनत का फल था कि 1963 में पहली बार मंगणियार कलाकारों का कोई दल दिल्ली जाकर स्टेज पर अपनी परफॉर्मेन्स दे सका।

राजस्थानी लोक संगीत की महत्ता, आवश्यकता और प्रासंगिकता को रेखांकित करना उनके जीवन का ध्येय था और वे इसमें पूरी तरह से सफल भी हुए। भारत सरकार ने उनके योगदान को पहचाना और उन्हें **पद्म श्री** (1963) तथा **पद्म भूषण** (2004) से सम्मानित किया। राजस्थानी लोक गीतों व कथाओं आदि के संकलन एवं शोध के लिए समर्पित कोमल कोठारी को राजस्थानी साहित्य में किए गए कार्य के लिए **नेहरू फैलोशिप** भी प्रदान की गई थी। इसके अतिरिक्त राजस्थान सरकार द्वारा इन्हें **राजस्थान रत्न** से भी सम्मानित किया गया। राजस्थान के ऐसे व्यक्ति, जो राजस्थानी लोक गीतों व कथाओं आदि के संकलन एवं शोध के लिए समर्पित थे। इन्हें भारत सरकार द्वारा सन् 2004 में कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए **पद्म भूषण** से सम्मानित किया गया था।

राजस्थानी लोक संगीत को संरक्षित करने वाले कोमल कोठारी का कैंसर के कारण 20 अप्रैल, 2004 में निधन हो गया।

राजपूतों के शौर्य का परिचय देते राजस्थान के जिलों के नाम

राजस्थान के 33 जिले है, जिनके नाम हैं : गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाडमेर, जालोर, सिरोही, उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, कोटा, बारां, सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर, भरतपुर, अलवर, जयपुर, सीकर, झुंझुनू, चूरु, भीलवाड़ा, हनुमानगढ़, नागौर, जोधपुर, पाली, अजमेर, बूंदी, राजसमंद, टोंक, दौसा। कृपया इन नामों को ध्यान से देखें,क्योंकि इन नामों में एक भी मुगलों के नाम नहीं है अर्थात एक भी जिले का नाम मुगलों पर नहीं है। लोग राजपूतों पर बहुत अंगुलिया उठाते हैं। कहते हैं राजपूतों ने क्या किया? इन जिलों के नाम से ही पता चलता है कि राजपूतों ने क्या किया। राजस्थान के जिलों के नाम राजपूतों के शौर्य का परिचय देते हैं। निम्नलिखित हैं एक-एक जिलों का परिचय।

अजमेर : अजमेर 27 मार्च 1112 में चौहान राजपूत वंश के 23वें शासक अजयराज चौहान ने बसाया था।

बीकानेर : बीकानेर का पुराना नाम जांगल देश, राव बीका जी राठौड़ के नाम से बीकानेर पड़ा।

गंगानगर : महाराजा गंगा सिंह जी से गंगानगर पड़ा!

जैसलमेर : जैसलमेर, महारावल जैसलजी भाटी ने बसाया।

उदयपुर : महाराणा उदय सिंह सिसोदिया जी ने उदयपुर को बसाया। उनके नाम से उदयपुर पड़ा।

बाड़मेर : बाड़मेर को राव बहाड़ जी ने बसाया।

जालौर : जालौर की नींव 10वीं शताब्दी में परमार राजपूतों के द्वारा रखी गई। बाद में चौहान, राठौड़, सोलंकी आदि राजवंशों ने शासन किया।

सिरोही : राव सोभा जी के पुत्र, शेशथमल ने सिरानवा हिल्स की पश्चिमी ढलान पर वर्तमान शहर सिरोही की स्थापना की थी। उन्होंने वर्ष 1425 ईसवी में वैशाख के दूसरे दिन (द्वितिया) पर सिरोही किले की नींव रखी।

डूंगरपुर : वागड़ के राजा डूंगरसिंह ने ई. 1358 में डूंगरपुर नगर की स्थापना की। बाबर के समय में उदयसिंह वागड़ का राजा था, जिसने मेवाड़ के महाराणा के संग्राम सिंह के साथ मिलकर खानुआ के मैदान में बाबर का मार्ग रोका था।

प्रतापगढ़ : प्रताप सिंह महारावत ने बसाया था।

चित्तौड़ : स्वाभिमान, शौर्य, त्याग, वीरता, राजपुताना की शान चित्तौड़, सिसोदिया (गहलोत) वंश ने बहुत शासन किया। बप्पा रावल, महाराणा प्रताप सिंह जी यहां शासन किया।

हनुमानगढ़ : भटनेर दुर्ग 285 ई. में भाटी वंश के राजा भूपत सिंह भाटी ने बनवाया, इसलिए इसे भटनेर कहा जाता है। मंगलवार को दुर्ग की स्थापना होने कारण हनुमान जी के नाम पर हनुमानगढ़ कहा जाता है।

जोधपुर : राव जोधा ने 12 मई, 1459 ई. में आधुनिक जोधपुर शहर की स्थापना की।

राजसमंद : शहर और जिले का नाम मेवाड़ के राणा राज सिंह द्वारा 17वीं सदी में निर्मित एक कृत्रिम झील, राजसमंद झील के नाम से लिया गया है।

बूंदी : इतिहास के जानकारों के अनुसार 24 जून 1242 में हाड़ा वंश के राव देवा ने इसे मीणा सरदारों से जीता और बूंदी राज्य की स्थापना की। कहा जाता है कि बूंदा मीणा ने बूंदी की स्थापना की थी, तभी से इसका नाम बूंदी हो गया।

सीकर : सीकर जिले को वीरभान ने बसाया था ओर 'वीरभान का बास' सीकर का पुराना नाम दिया।

पाली : महाराणा प्रताप की जन्मस्थली एवं महाराणा उदयसिंह का ससुराल है। पाली मूलतया पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा बसाया गया है।

भीलवाड़ा : किवदंती है कि इस शहर का नाम यहां की स्थानीय जनजाति भील के नाम पर पड़ता है, जिन्होंने 16वीं शताब्दी में अकबर के खिलाफ मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप की मदद की थी। तभी से इस जगह का नाम भीलवाड़ा पड़ गया।

करौली : इसकी स्थापना 955 ई. के आसपास राजा विजय पाल ने की थी, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे भगवान कृष्ण के वंशज थे।

सवाई माधोपुर : राजा माधोसिंह ने ही शहर बसाया और इसका नाम सवाई माधोपुर दिया।

जयपुर : जयपुर शहर की स्थापना सवाई जयसिंह ने 1727 में की। सवाई प्रताप सिंह से लेकर सवाई मान सिंह द्वितीय तक कई राजाओं ने शहर को बसाया।

नागौर : नागौर दुर्ग भारत के प्राचीन क्षत्रियों द्वारा बनाए गए दुर्गों में से एक है। माना जाता है कि इस दुर्ग के मूल निर्माता नाग क्षत्रिय थे। नाग जाति महाभारत काल से भी कई हजार साल पुरानी थी। यह आर्यों की ही एक शाखा थी तथा ईक्ष्वाकु वंश से किसी समय अलग हुई।

अलवर : कछवाहा राजपूत राजवंश द्वारा शासित एक रियासत थी, जिसकी राजधानी अलवर नगर में थी। रियासत की स्थापना 1770 में प्रभात सिंह प्रभाकर ने की थी।

धौलपुर : मूल रूप से यह नगर ग्याहरवीं शताब्दी में राजा धोलन देव ने बसाया था। पहले इसका नाम धवलपुर था, अपभ्रंश होकर इसका नाम धौलपुर में बदल गया।

झालावाड़ : झालावाड़ गढ़ भवन का निर्माण राज्य के प्रथम नरेश महाराजराणा मदन सिंह झाला ने सन 1840 में करवाया था।

दौसा : बड़गूजरों द्वारा करवाया गया था। बाद में कछवाहा शासकों ने इसका निर्माण करवाया।

राजपूतों ने हमेशा शत्रुओं को पछाड़ा है, ना कभी किसी से हारे हमेशा विजय रहे, अपने क्षत्रिय धर्म पर अटल रहे। कुछ युद्ध हारे है, जो नगण्य है!

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के द्वारा पूर्वोत्तर की शाखाओं के जरिए नि:शुल्क मास्क वितरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा नि:शुल्क प्रदान किए जाने वाले मास्क पूर्वोत्तर प्रांत में भी आने प्रारंभ हो चुके हैं। गुवाहाटी में उक्त मास्क की प्रथम खेप गुवाहाटी शाखा के अध्यक्ष श्री साँवरमल जी अग्रवाल के पास पहुँच चुकी है जहाँ से आसपास की शाखाओं को प्रेषित किए जा रहे हैं। गांधी जयंती के दिन गुवाहाटी महिला शाखा ने उक्त मास्क का सार्वजनिक तौर पर वितरण किया। मास्क की क्वालिटी भी अच्छी है जो रोज पहनने व धोने की दृष्टि से उपयुक्त है। साँवरमल जी के द्वारा खारूपेटिया, रंगापाड़ा एवं ढेकियाजूली के लिए उक्त मास्क गुवाहाटी से खारूपेटिया भेजे जा रहे हैं। डिब्रुगढ़ एवं तिनसुकिया भी भेजे गए हैं। अन्य जगहों पर भी भेजे जा रहे हैं।

राजकुमार तिवाड़ी
प्रांतीय महामंत्री

पुत्री ने दिया पिता की अर्थी को कंधा

समाज में आमतौर पर महिलाओं द्वारा अर्थी को कंधा देने का रिवाज नहीं है, परंतु गोलघाट की एक पुत्री ने अपने पिता की अर्थी को कंधा देकर मिसाल कायम की है। मालूम हो कि गोलाघाट के वयोवृद्ध समाजसेवी गौरीशंकर बिन्नाणी की अंतिम यात्रा में अच्छी पहल के साथ उनकी पुत्री अलका बागड़ी (धर्मपत्नी नवीन बागड़ी, बंगाईगांव) ने अर्थी को कंधा दिया। उनकी इस पहल से समाज में बदलाव की उम्मीद भी बंधी है।

कविता

व्यापारी होना भी कहाँ है आसान दोस्तों

काम करना नियति नहीं, काम हमारा जनून है।
न दिन में है हमें फुरसत, न रात को शकून है॥
उलझन कोई आये, हम न होते परेशान दोस्तों।
व्यापारी होना भी कहाँ है आसान दोस्तों॥

सरकार के लिए करते टैक्स कलेक्शन, जॉब को न रोते।
न करते रहम की गुजारिश, न दुखड़ा किसी से रोते॥
हमें तो बस अपने दमखम पे है गुमान दोस्तों।
व्यापारी होना भी कहाँ है आसान दोस्तों॥

खेत से पेट तक यात्रा, अन्न को हम कराते।
कपास को वस्त्र बना लोगों तक हम पहुंचात॥
पर दुनियां में कौन हमारा है कदरदान दोस्तों।
व्यापारी होना भी कहाँ है आसान दोस्तों॥

सब हमारे हाकिम हैं, सब की हम हैं सुनते।
नित नए कानून बनाकर चोर हमें हैं समझत॥
जो न होती अदालत, क्या होता अंजाम दोस्तों।
व्यापारी होना भी कहाँ है आसान दोस्तों॥

कहीं हो कोई मजमा या हो कोई मुसीबत।
सैलाब हो कहीं पर या हो महामारी कोरोना की आफत॥
ना दिल किया छोटा, न दिया तिजोरी पे ध्यान दोस्तों।
व्यापारी होना भी कहाँ है आसान दोस्तों॥

साहित्य ही हो या हो फिर सिनेमा तुम्हारा।
नेता हो या प्रशासन, बनाते मजाक हमारा॥
नहीं मिला कभी हमें राष्ट्र से सम्मान दोस्तों।
व्यापारी होना भी कहाँ है आसान दोस्तों॥

विनोद कुमार लोहिया

मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा ने कराया यज्ञ

मारवाड़ी सम्मेलन महिला शाखा ने हाल ही में विश्व शांति के लिए यज्ञ कराया। चारों और भय और आशंका से ग्रसि लोग, कोरोना महामारी से विश्व में मचे हाहाकार, आर्थिक मंदी को दूर करने की कामना के लिए शाखा ने गत 27 सिंतबर को अधिकमास की एकादशी के अवसर पर यह यज्ञ करवाया। इस कार्यक्रम में कोरोना महामारी को लेकर सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देश के तहत कुल 50 लोग ही उपस्थित हुए। इस दौरान सभी ने सामाजिक दूरी का पालन किया।

आचार्य गोस्वामी ने सभी से धार्मिक मत्रों का पाठ करवाया, यज्ञ गीत तथा प्रार्थना गीत गवाए। मुख्य यजमान की भूमिका अध्यक्ष श्रीमती कंचन केजरीवाल ने निभाई। आचार्य गोस्वामी दंपति ने बहुत ही सहज तरीके से यज्ञ संपन्न।मनीषा गोस्वामी ने दांपत्य जीवन में महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। इससे पहले शाखा ने हिंदी दिवस पर एक **प्रश्न पहेली प्रतियोगिता** का भी आयोजन किया। इसमें हिंदी साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, गणित, फिल्म एवं खेल से जुड़े प्रश्न व पहेलियां पूछी गईं। यह प्रतियोगिता चार चरणों में व्हाट्सअप के जरिए आयोजित की गई। इसमें तिनसुकिया, शिलापथार, बरपेटा, लखीमपुर आदि स्थानों के महिला प्रतियोगियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन शाखा की अध्यक्ष श्रीमती कंचन केजरीवाल ने किया।

वहीं गत 5 सिंतबर को शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में शाखा ने वर्चुअल साक्षात्कार कार्यक्रम **'रूबरू'** का आयोजन किया। इस अवसर पर प्राइमर स्कूल शेमरॉक प्राची की प्रिंसिपल श्रीमती ममता शर्मा, रॉयल ग्लोबल स्कूल की सीनियर कोऑर्डिनेटर श्रीमती विनीता जैन, गुवाहाटी कॉमर्स कॉलेजसे असिस्टेंट प्रोफेसर श्रीमती श्वेता शर्मा, हैप्पी चाइल्ड हाई स्कूल की अध्यापिका श्रीमती मंजुलता शर्मा व गुरु नानक स्कूल कू शिक्षिका श्रीमती हेमलता गोलछा को आमंत्रित किया गया था।

सिलचर शाखा ने एसएमसीएच को दिए स्ट्रेचर व ह्वीलचेयर

सम्मेलन की सिलचर शाखा ने गत 18 सितंबर 2020, शुक्रवार को सिलचर मेडिकल कॉलेज व अस्पताल (एसएमसीएच) को 10 स्ट्रेचर और पांच ह्वीलचेयर प्रधान किए। इसके प्रायोजक बुधमल बैद और मूलचंद बैंद थे। असम विधानसभा के उपाध्यक्ष अमीनुल हक लस्कर, एसएमसीएच के प्रिंसिपल डॉ. बी बेजबरुवा की मौजूदगी में ये स्ट्रेचर और ह्वीलचेयर सौंपे गए। इस मौके पर मारवाड़ी सम्मेलन, सिलचर के अध्यक्ष मूलचंद बैद, सचिव मुरली अग्रवाल के साथ-साथ कमल सारदा, महावीर प्रसाद जैन, मनोज जैन, दिलीप जैन, राजकुमार जैन, सुशील गंग, भजनलाल प्रजापति, बुधमल बैद और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस दौरान सदस्यों ने असम विधानसभा के उपाध्यक्ष अमीनुल हक लस्कर को मारवाड़ी सम्मेलन की सामाजिक गतिविधियों तथा कोरोना संकटकाल में संगठन द्वारा जनहित में किए गए सराहनीय कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने मारवाड़ी समुदायके इस नेक कार्य को सराहा, वहीं एसएमसीएच के प्रिंसिपल डॉ. बी बेजबरुवा ने आभार प्रकट किया।

जोरहाट शाखा ने की प्लाज्मा दान की अपील

मारवाड़ी सम्मेलन, जोरहाट शाखा ने कोरोना संक्रमण से स्वस्थ हो चुके लोगों से प्लाज्मा दान करने की अपील की है। शाखा ने गत 15 अगस्त को 74वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर यह अपील की थी। उल्लेखनीय है कि जोरहाट मेडिकल कॉलेज में प्लाज्मा संग्रह की व्यवस्था हो गई है। कोरोना संक्रमण से स्वस्थ हो चुके मरीज अपना प्लाज्मा दान करने से दो कोरोना संक्रमित मरीज ठिक हो सकते हैं।

नगांव शाखा ने नव नियुक्त जिला उपायुक्त का किया अभिनंदन

मारवाड़ी सम्मेलन, नगांव शाखा ने नगांव जिले की नव नियुक्त जिला उपायुक्त श्रीमती कविता पद्मनाभन, IAS, का आज उनके कार्यालय में जाकर फुलाम गमोछा और गुलदस्ता प्रदान कर अभिनन्दन किया। इस अवसर पर शाखा के अध्यक्ष अनिल शर्मा, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष बी. के. मंगलुनिया और शाखा उपाध्यक्ष ललित कुमार कोठारी उपस्थित थे। जिला उपायुक्त महोदया ने जिले के उन्नयन के लिए अपनी प्राथमिकताओं के बारे में संक्षिप्त चर्चा की और सहयोग का आह्वान किया।

बरपेटा रोड शाखा ने टैंलट शो का किया आयोजन

मारवाड़ी सम्मेलन, बरपेटा रोड महिला शाखा ने लॉकडाउन के तहत 74 वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर ऑनलाइन **फैंसी ड्रेस एवं टैलेंट शो प्रतियोगिता** का आयोजन किया।

प्रांतीय संयोजिका एवं गुवाहाटी महिला शाखाध्यक्षा श्रीमती कंचनजी केजरीवाल एवं प्रांतीय अध्यक्ष महोदय की धर्मपत्नी, श्रीमती रंजनाजी सिकरिया ने अपना बहुमूल्य समय देकर इस प्रतियोगिता का जजमेंट किया, इसके लिए मारवाड़ी बरपेटा रोड महिला शाखा का यह कार्यक्रम अत्यंत ही सराहनीय है। ऐसे कार्यक्रमों के द्वारा ही हम समाज के हर वर्ग को सम्मेलन के करीब ला सकते हैं।

कोरोना योद्धा बनकर डॉ. आयुषी ने की सेवा

नगांव की बेटी आयुषी लोहिया ने कोरोना संकटकाल के दौरान इस महामारी से जंग में कोरोना योद्धा बनकर अपना सराहनीय योगदान दिया। तेजपुर मेडिकल कटलेज से एम.बी.बी.एस. की डिग्री हासिल करने वाली डॉ. आयुषी ने तेजपुर मेडिकल कॉलेज में कोरना वारियर के रूप में अपनी सेवाएं दी। उल्लेखनीय है कि आयुषी ने संपूर्ण असम में 30वां रेंक प्राप्त किया और तेजपुर मेडिकल कॉलेज में तीसरा स्थान प्राप्त किया। डॉ. आयुषी नगांव के हैबरगांव के श्री इंद्रचंद लोहिया की सुपौत्री और श्रीमती पूनम-राजेंद्र लोहिया की सुपुत्री है। मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा डॉ. आयुषी के उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

डॉ. आयुषी की तरह चिकित्सा क्षेत्र में काम करने वाले समाज की कई अन्य चिकित्सकों ने भी कोरोना महामारी के दौरान गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल सहित देश के अन्य अस्पतालों, कोविड केयर सेंटरों में अपनी सेवाएं दी। इनमें डॉ. अभिषेक अग्रवाल, डॉ. आदित्य गोयनका, डॉ. अंकि जितानी, डॉ. अतुल कुमार अग्रवाल, डॉ. बिकास अग्रवाल, डॉ. दिनेश अग्रवाल, डॉ. दीपक कुमार अग्रवाला, डॉ. एकता जाजोदिया जितानी, डॉ. ईशा गोयल, डॉ. कीर्ति जोधानी, डॉ. पूजा अग्रवाल, डॉ. प्राची बाइसिया, डॉ. प्रदीप कुमार अग्रवाल आदि शामिल हैं।

कोविड-19 : मेरा अनुभव

कोरोना संकटकाल में हम दु:ख-दर्द एवं डर से गुजर रहे हैं। यह वायरस जानलेवा है। पर सब कहते हैं कि डरो मत यह भी अपनी मियाद पूरी करके एक दिन चला जाएगा। हमें अब बाहर जाना मना है। बाहर जाने पर हमें मास्क लगाना पड़ता है और सामाजिक दूरी रखनी पड़ती है। हमारी अब ऑनलाइन कलासेस हो रही हैं। लॉकडाउन में मेरा सबसे अच्छा अनुभव मेरे लैपटॉप के साथ रहा। इससे मुझे पढ़ाई में मदद मिलली है और इसके जरिए मैं दोस्तों से भी मिलता हूं। आज के दिन हम घर की चहारदिवारी के अंदर सीमित हैं, पर हम कुछ नया करने की कोशिश करते हैं। इस दौरान मैंने फूलों की संदरता कोजाना, चिड़ियों की चहचहाहट को पहचाना। उगते हुए सूरज की लालिमा को, बादल की घनी छांव का और रिमझिम बारिश की फुहार का आनंद लिया। पर कभी-कभी मुझे लगता है कि हमारी जिंदगी में एक अनिश्चितता-सी आ गई है। सारी दुनिया इस बीमारी की चपेट में है और इसका कोई अंत नजर नहीं आता। मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि जल्द से जल्द यह बीमारी इस दुनिया से चली जाए और हम बच्चे पहले की तरह स्कूल जा सके और खेल के मैदान का आनंद ले सके।

रिषिक झुनझुनवाला
कक्षा-4, गुवाहाटी

उपलब्धि

गरिमा अग्रवाल

बंगाईगांव की बेटी गरिमा अग्रवाल ने बीट्स, हैदराबाद से अच्छे अंकों से माईक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स में एम.टेक. की डिग्री हासिल कर बंगाईगांव के साथ-साथ मारवाड़ी समाज को गौरवान्वित किया है। गरिमा ने 10 में से 9.77 सीजीपीए अंक हासिल कर संस्थान का भी नाम रोशन किया है। ज्ञात हो कि गरिमा ने वर्ष 2016 में भी गौहाटी विश्वविद्यालय के अंतर्गत रॉयल ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूसंस से सभी सेमेस्टरों में अव्वल रहते हुए बीई में सर्वोच्च अंक हासिल कर प्रथम स्थान प्राप्त किया था। गरिमा अग्रवाल बंगाईगांव के एओसी रोड निवासी स्व. रामनिवास अग्रवाल व जानकी देवी की सुपौत्री एवं महेश कुमार अग्रवाल व नीता अग्रवाल की पुत्री है। शुभचिंतकों ने अपनी प्रसन्नता जाहिर की।

सिजल अग्रवाल

जोरहाट की सिजल अग्रवाल ने यू.पी.एस.सी सिविल सेवा परीक्षा 2019 में 112वां स्थान हासिल कर जिले के साथ-साथ मारवाड़ी समाज को गौरान्वित किया है। सिजल जोरहाट के चेंबर रोड के निवासी बिनोद अग्रवाल व ममता अग्रवाल की मझली बेटी है। मालूम हो कि सिजल राज्य भर में यू.पी.एस.सी सिविल सेवा परीक्षा 2019 उत्तीण करने वाली मारवाड़ी समाज की एकमात्र युवती है। सिजल ने जोरहाट के कारमेल स्कूल से मैट्रिक (आईसीएसई) और असम राइफल्स नोडल स्कूल से एच.एस.एस.एल.सी की परीक्षा पास की थी। उसने दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से बी.कॉम और दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स से स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेज्यूशन) की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वह आई.ए.एस, फिर आई.पी.एस के बाद आई.आर.एस/आई.टी बनना चाहती है।

ढोला-मारू
की अमर प्रेम कहानी

राजस्थान की लोक कथाओं में बहुत सी प्रेम कथाएँ प्रचलित हैं, पर इन सबमे ढोला मारू प्रेम गाथा विशेष लोकप्रिय रही है। इस गाथा की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आठवीं सदी की इस घटना का नायक ढोला राजस्थान में आज भी एक-प्रेमी नायक के रूप में स्मरण किया जाता है और प्रत्येक पति-पत्नी की सुंदर जोड़ी को ढोला-मारू की उपमा दी जाती है। यही नहीं आज भी लोक गीतों में स्त्रियाँ अपने प्रियतम को ढोला के नाम से ही संबोधित करती हैं, ढोला शब्द पति शब्द का प्रयायवाची ही बन चूका है। राजस्थान की ग्रामीण स्त्रियाँ आज भी विभिन्न मौकों पर ढोला-मारू के गीत बड़े चाव से गाती है ।

इस कहानी के अनुसार नरवर के राजा नल के पुत्र साल्हकुमार (ढोला) का विवाह महज 3 साल की उम्र में बीकानेर स्थित पूंगल क्षेत्र के पंवार राजा पिंगल की पुत्री मारू से हुआ। चूंकि यह बाल-विवाह था, अत: गौना नहीं हुआ था। जब राजकुमार वयस्क हुआ तो उसकी दूसरी शादी कर दी गई, परंतु राजकुमारी को गौने का इंतजार था। बड़ी होकर वह राजकुमारी अत्यंत सुंदर और आकर्षक बन गई थी।

राजा पिंगल ने दुहन (पुत्री) को भेजने के लिए नरवर तक कई संदेश भेजे, लेकिन राजकुमार की दूसरी पत्नी उस देश से आने वाले हर संदेश वाहक की हत्या करवा देती थी। राजकुमार अपने बचपन की शादी को भूल चुके थे, लेकिन दूसरी रानी इस बात को जानती थी। उसे डर था कि राजकुमार को सब याद आते ही वे दूसरी रानी को छोड़कर चले जाएंगे, क्योंकि पहली रानी बेहद खूबसूरत थी।

पहली रानी इस बात से अंजान, राजकुमार को याद किया करती थी। उसकी इस दशा को देख पिता ने इस बार एक चतुर ढोली को नरवर भेजा। जब ढोली नरवर के लिए रवाना हो रहा था, तब राजकुमारी ने उसे अपने पास बुलाकर मारू राग में दोहे बनाकर दिए और समझाया कि कैसे उसके प्रियतम के सम्मुख जाकर गाकर सुनाना है।

चतुर ढोली एक याचक बनकर नरवर के महल पहुंचा। रात में रिमझिम बारिश के साथ उसने ऊंची आवाज में ने मल्हार राग में गाना शुरू किया। मल्हार राग का मधुर संगीत राजकुमार के कानों में गूंजने लगा। ढोली ने गाते हुए साफ शब्दों में राजकुमारी का संदेश सुनाया। गीत में जैसे ही राजकुमार ने राजकुमारी का नाम सुना, उसे अपनी पहली शादी याद आ गई। ढोली ने बताया कि उसकी राजकुमारी कितनी खूबसूरत है और वियोग में है। ढोली के अनुसार राजकुमारी के चेहरे की चमक सूर्य के प्रकाश की तरह है, झीणे कपड़ों में से शरीर ऐसे चमकता है मानो स्वर्ण झांक रहा हो। मोरनी जैसी चाल, हीरों जैसे दांत, गुलाबी सरीखे होंठ है। बहुत से गुणों वाली, क्षमाशील, नम्र व कोमल है, गंगा के पानी जैसी गोरी है, उसका मन और तन श्रेष्ठ है। लेकिन उसका साजन तो जैसे उसे भूल ही गया है और लेने नहीं आता।

सुबह राजकुमार ने उसे बुलाकर पूछा तो उसने राजकुमारी का पूरा संदेशा सुनाया। आखिर साल्हकुमार ने अपनी पहली पत्नी को लाने का निश्चय किया पर उसकी दूसरी पत्नी मालवणी ने उन्हें रोक दिया। ढोला ने कई बहाने बनाए पुगल जाने के, पर मालवणी हर बार उसे किसी तरह रोक देती। आखिरकार एक दिन राजकुमार एक बहुत तेज चलने वाले ऊंट पर सवार होकर अपनी प्रियतमा को लेने पूंगल पहुंच गया। राजकुमारी अपने प्रियतम से मिलकर खुशी से झूम उठी। दोनों ने पूंगल में कई दिन बिताए। एक दिन जब दोनों ने नरवर जाने के लिए राजा पिंगल से विदा ली तब जाते समय रास्ते के रेगिस्तान में राजकुमारी को सांप ने काट लिया, पर शिव पार्वती ने आकर उसको जीवन दान दे दिया। लेकिन इसके बाद उनका सामना उमरा-सुमरा सें हुआ जो साल्हकुमार को मारकर राजकुमारी को हासिल करना चाहता था। वह उसके रास्ते में जाजम बिछाकर महफिल सजाकर बैठ गया। राजकुमार सल्हाकुमार अपनी खूबसूरत पत्नी को लेकर जब उधर से गुजरा तो उमर ने उससे मनुहार की और उसे रोक लिया। राजकुमार ने राजकुमारी को ऊंट पर बैठे रहने दिया और खुद उमर के साथ अमल की मनुहार लेने बैठ गया। इधर, ढोली गा रहा था और राजकुमार व उमर अफीम की मनुहार ले रहे थे। मारू के देश से आया ढोली बहुत चतुर था, उसे उमर सुमरा के षड्यंत्र का आभास हो गया था। ढोली ने चुपके से इस षड्यंत्र के बारे में राजकुमारी को बता दिया।

राजकुमारी भी रेगिस्तान की बेटी थी, उसने ऊंट को एड़ी मारी, जिससे ऊंट भागने लगा। ऊंट को रोकने के लिए राजकुमार दौड़ने लगा, जैसे ही राजकुमार पास आया, मारूवणी ने कहा- धोखा है जल्दी ऊंट पर चढ़ो, ये तुम्हें मारना चाहते हैं। इसके बाद दोनों ने वहां से भागकर नरवर पहुंचकर ही दम लिया। यहां राजकुमारी का स्वागत सत्कार किया गया और वह, वहां की रानी बनकर राज करने लगी।

ICI

Since 1976

INDIAN CANVAS INDUSTRIES

e-mail : indiancanvas@gmail.com

Manufacturer of all types of Tents, Canvas/HDPE Tarpaulins, Automobile Hoods, Canopies, Mosquito Net FR, Coat Combat, Kit Bag, Kit Box (Steel), Synthetic/Cotton Web Items, Uniform Items and allied Textile Products.

GMR

GMR INFRACON

e-mail : gmrinfracon@gmail.com

Manufacturer of Concrete Paver Blocks, Fly Ash Bricks
Designer Coloured Parking Tiles & Pavers.

With Best Compliments From

Mukesh Kr. Jindal

923, Fatasil Main Road
Near R.G. Barua College
Guwahati-781009 (Assam)

Ph. : 0361-2472921
91 94350 44872